अध्याय – द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे वह भौतिक विज्ञान में हो चाहे सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में संबधित साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारंभिक कदम है। समस्या से संबधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है।

साहित्य का सावधानी पूर्वक पुनरावलोकन अनुसंधान से संबंधित क्षेत्र में अनुसंधान कर्ता को महत्वपूर्ण चरों के बारें में जानकारी प्रदान करता है तथा उसके क्षेत्र की सीमा में स्थित चरों को चुनने में मदद करता है। तथा पूर्व में किए गए शोधकार्य की पुनरावृत्ति को रोकता है, वर्तमान अध्ययन के लिए आधारशिला का कार्य करता है, साहित्य के पुनरावलोकन के माध्यम से एक अनुसंधान कर्ता भावी अनुसंधानों के लिए एक अच्छा परिदृश्य बनाता है। साहित्य का सृजन पुनरावलोकन अनुसंधान कर्ता को वर्तमान अध्ययन से संबंधित पूर्व में किए गए अध्ययनों को एकत्रित तथा स्वीकृत करने में सहायक होता है। पूर्व में किए गए अध्ययनों का एकीकृत संग्रह अनुसंधान कर्ता को संबधित शोध को पहचानने मे मदद करता है।

संबधित साहित्य की समीक्षा अनुसंधायक को जिस क्षेत्र में वह अनुसंधान करने वाला है उसमें वर्तमान ज्ञान से परिचय कराती है तथा निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य पूर्ण करती है।

1. संबधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधायक को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है।
2. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान कर्ता को पूर्व में किए गए शोधकार्य की पुनरावृत्ति करने से रोकता है।
3. उपयुक्त शोध विधियों के चयन में मदद करता है।
4. अनुसंधान की रूप रेखा निर्धारण करने में सहायक होता है।

5. तुलनात्मक अध्ययन एवं तत्संबंधी व्याख्या हेतु आँकड़ो का निर्धारण करने में मदद करता है।

2.2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता नें शोधसाहित्य का निम्नांकित रूप से अध्ययन किया है-

- **जोशी, अनिता (2008)** ने गाँधी जी की बेसिक शिक्षा योजना : वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रसांगिकता विषय पर अध्ययन किया है। प्रस्तुत शोध अध्ययंन की प्रकृति सैद्धांतिक एवं दार्शिनिक है। शोध के प्रधान उद्देश्य थे भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याओं का अध्ययन, गाँधी जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना, बेसिक शिक्षा योजना की वर्तमान उपयुक्तता का अध्ययन करना।

  इस अध्ययन के मुख्य निहितार्थ इस प्रकार थे, बेसिक शिक्षा योजना प्रयोगाधारित है। शिक्षित होने के बावजूद व्यक्ति मानसिक श्रमपर आधारित व्यवसाय के आभाव में तनाव ग्रस्त न होकर शारीरिक श्रमयुक्त किसी भी व्यवसाय को अपनाएगा। बेसिक शिक्षा योजना द्वारा शिक्षा ग्रहण करने पर बालक रचनात्मक प्रवृत्ति को महत्व देगा ।

- **खाड़े, सीमा (2009)** ने रयत शिक्षण संस्थान के छत्रपति शिवाजी कॉलेज सातारा के अधीन चलाई जानेवाली स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों के वाचन कौशल के बारे में अध्ययन किया है उनके अध्ययन का उद्देश्य था स्वावलंबी शिक्षा योजना के विद्यार्थियों के वाचन कौशल का अध्ययन करना, उन्हें दी जाने वाली सुविधा का अभ्यास करना, विद्यार्थियों को वाचन हेतु प्राप्त साहित्य का अवलोकन करना, विद्यार्थियों की वाचन अभिरूचि की वृद्धि हेतु उपाय सुझाना।

  इस अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार थे, योजना के विद्यार्थियों में वाचन कौशल विकसित हैं, विद्यार्थियों को पर्याप्त सुविधाएँ दी जाती हैं, विद्यार्थियों की पठन रूचि का उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव दिखाई देता है।

- **देशमुख, सचिन (2010)** ने स्वावलंबी शिक्षा योजना की सद्यस्थिती से संबंधित अध्ययन किया जिसमें विद्यार्थियों को दी जानेवाली सुविधाएँ, विद्यार्थियों के श्रम का अध्ययन पर दिखाई देने वाला प्रभाव आदि उद्देश्य तय किए गए थे।

  अतः इस अध्ययन के अनुसार अर्थाभाव के कारण शिक्षा पूरी न कर सकनेवाले विद्यार्थी इस योजना में अधिक प्रविष्ठ होते है। योजना में विद्यार्थियों द्वारा किए जाने वाले श्रम का उनके अध्ययन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव दिखाई नहीं देता है।